सौरभ

न्यूयार्क से प्रकाशित एकमात्र त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

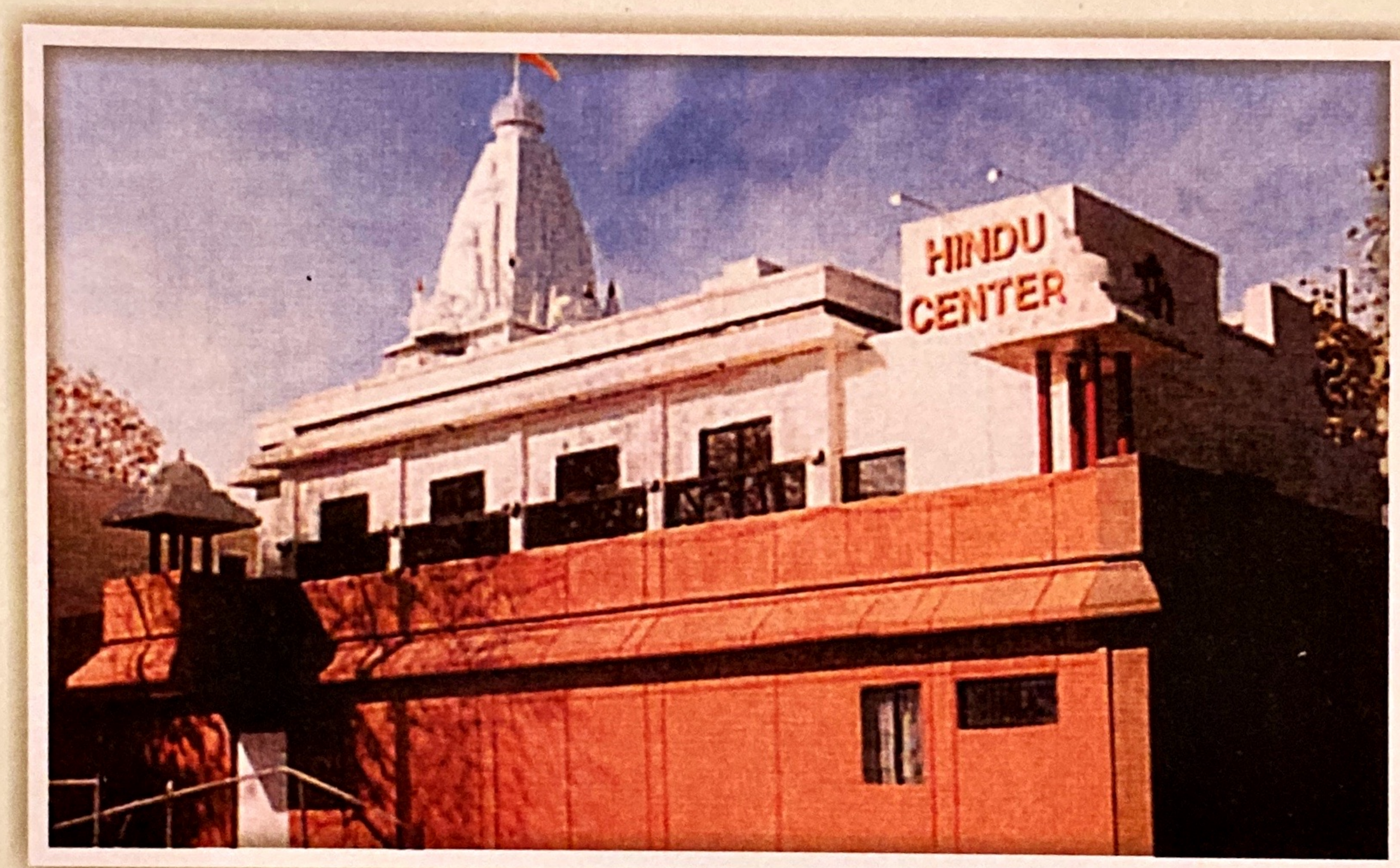

45-53 Kissena Blvd, Flushing, NY 11355 Tel. 718-358-6726. Fax 718-661-1512
Web : www.hinducentre.com

न्यूयार्क शहर में फ्लशिंग स्थित हिन्दु सेन्टर न्यूयार्क में बसे भारतीय मूल के हिन्दुओं का धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक केन्द्र तथा जून 27 और 28 2008 को आयोजित अखिल विश्व हिन्दी समिति के वार्षिक सम्मेलन का आयोजन स्थल।

अप्रैल से जून 2008

भारतीय-अमरीकी युग वर्ग और हिन्दी

न्यूयार्क में स्थित कोलम्बिया विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका के तौर पर हिन्दी भाषा पढ़ाते हुए मुझे यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि हमारे युवा भारतीय-अमरीकी विद्यार्थी आजकल हिन्दी भाषा को सीखने में एक विशेष रुचि ले रहे हैं। आश्चर्य इस बात का है कि उन में से कुछ विद्यार्थी थोड़ी बहुत हिन्दी समझते तो है किन्तु भारतीय परिवारों से होते हुए भी पहले से ही सही हिन्दी पढ़ना, लिखना या बोलना नहीं जानते हैं। क्योंकि उन्हें पूर्ण रूप से हिन्दी भाषा का ज्ञान दिया ही नहीं गया, तो जब वे मेरी कक्षाओं में हिन्दी सीखने आते हैं तो अक्सर हिन्दी वर्णमाला अक्षरों से ही प्रारम्भ करनी पड़ती है।

इन विद्यार्थियों की हिन्दी सीखने में गम्भीर रुचि निस्संदेह प्रशंसनीय है। किसी भी नई भाषा को सीखने में आनेवाली कठिनाईयों के बावजूद ये विद्यार्थी अपने व्यस्त जीवन में से हिन्दी सीखने के लिए समय निकालते हैं-केवल इसलिए कि वे स्वयं को हिन्दी द्वारा अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति से फिर से जोड़ सकें।

अधिक हैरानी इस बात की हैं कि इन युवा भारतीय-अमरीकी विद्यार्थियों के माता-पिता तथा अन्य परिवारिक लोग हिन्दी बोलना, पढ़ना, लिखना व समझना बखूबी जानते हैं किन्तु फ़िर भी किसी कारण वश ये युवा वर्ग भारतीय सभ्यता से अथवा हिन्दी भाषा से नहीं जुड़ा। एक वजह यह भी है कि यह युवा वर्ग सब कुछ अग्रेंजी में करता है। और, हम सभी जानते हैं कि अंग्रेजी का ज्ञान आजकल आर्थिक सफ़लता के लिए कितना आवश्यक है। इसीलिए आप्रवासी माता-पिता भी अपने बच्चों को अच्छा भविष्य देने के लिए यह चाहते हैं कि उनके बच्चों को अग्रेंज़ी भाषा का पूरा ज्ञान प्राप्त हो, जिस से वे दुनिया में कहीं भी उन्नति कर सकें।

आप्रवासी भारतीय परिवारों में घर व बाहर अंग्रेज़ी का अधिक प्रयोग हिन्दी सीखने की आवश्यकता को कम कर देता हैं। बच्चे अमरीका में रहें या भारत से बाहर किसी भी देश में क्यों न रहें, हिन्दी के ज्ञान के अभाव से उन में अपनों से बातचीत करने, संबंधियों अथवा सभ्यता को समझने के मध्य में एक दूरी सी बन जाती है। कई बार युवा वर्ग के लिए यह समझना कठिन हो जाता है कि उन के माता-पिता अथवा बॉलिवुड के सितारे भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग तरह से हिन्दी भाषा का प्रयोग क्यों और कैसे करते हैं? भाषा ज्ञान का यह अभाव उन में कई भारतीय बातों को समझने के लिए एक खाई सी पैदा कर देता है।

युवा वर्ग अपने स्तर पर कई बार इस दूरी को समाप्त करने का प्रयास करता है और यह दक्षिण ऐशियाई जीवन तथा हिन्दी भाषा को जानने के लिए अंग्रेजी में तरह-तरह के प्रश्न पूछता भी है, किन्तु उन्हें सन्तोषजनक उत्तर नहीं प्राप्त होता। उन्हें यह कह कर शान्त कर दिया जाता है कि "सब लोग ऐसे ही करते हैं" या "बस ऐसे ही समझ लो।"

हिन्दी सीखने के प्रयास के बाद ये विद्यार्थी अपने जीवन में पहली बार परिवार व संबंधियों से हिन्दी में प्रभावशाली तरीके से बातचीत कर पाते हैं। और हिन्दी साहित्य, फ़िल्मों और गीतों को समझने लगते हैं। ऐसे कई अवसरों पर वे मुझे अपनी अपार प्रसन्नता प्रकट करता हैं। जब वे हिन्दी भाषा को गहराई से जानने व अनुभव करने लगते हैं तो भावुकता का यह अनोखा अहसास उन्हें मनोवैज्ञानिक शक्ति प्रदान करता है। हिन्दी भाषा का यह ज्ञान उन्हे वर्तमान और भूतकाल के बारे में जानने में सहायता करता हैं। और मातृभाषा को न जानने की रिक्तता को पूर्णता में बदल देता है।

यदि हिन्दी भाषा के ज्ञान से इस युवा वर्ग को वंचित रखा गया तो यह युवा वर्ग अपनी संस्कृति को कभी समझ पाएगा। अपनी ही भाषा को बोलने, समझने की शक्ति को खो बैठेगा। हिन्दी भाषा को सजीव रखने के लिए यदि हम कुछ प्रयास करें तो अवश्य ही वे महत्वपूर्ण होंगे। हिन्दी भाषा को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने के लिए हमें घर, परिवार व बच्चों में इस के प्रति रुचि, बोलने के अवसर प्रदान करने होंगे। हिन्दी को हम पूरा सम्मान दें। अपनी भाषा के अहसास को हम गम्भीरता से लें। हिन्दी सीखें व सिखायें। और अपनी भाषा पर गर्व करें।

• सोनिया शर्मा
न्यूयार्क